3. रहीम

कवि परिचय –

हिन्दी साहित्य की समृद्धि में मुस्लिम कवियों का विशेष योगदान रहा है। इन कवियों में रहीम नाम से विख्यात 'अब्दुल रहीम खानखाना' का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म सन् 1556 ई० में सम्राट् अकबर के संरक्षक एवं परम विश्वासपात्र बैरम खाँ के घर लाहौर में हुआ। माता का नाम सुल्ताना बेगम था। रहीम को वीरता, राजनीति, राज्य संचालन, दान आदि गुण अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त हुए थे। सन् 1562 ई० में बैरम खान की मृत्यु के पश्चात् रहीम की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध अकबर ने स्वयं किया। रहीम तुर्की, अरबी, फारसी, उर्दू, हिंदी, संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के जानकार थे। अकबर इनकी बुद्धिमत्ता, वीरता आदि से इतना प्रभावित हुआ कि उसने शहजादों को दी जाने वाली उपाधि मिर्जा खान से सम्मानित किया। रहीम का देहावसान सन् 1626 ई० में हुआ।

रहीम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके व्यक्तित्व में विविध गुणों का विलक्षण योग था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, बहुभाषाविद्, कला पारखी और राजनीतिज्ञ तथा प्रत्युत्पन्नमति थे। उनके 'दोहे' ब्रजभाषा में, 'बरवै' अवधी में तथा 'मदनाष्टक' खड़ी बोली में हैं। रहीम की रचनाएँ जीवन रस से परिपूर्ण हैं। मानसिक औदार्य, सांस्कृतिक विशालता और धार्मिक सहिष्णुता, मानवीयता इनकी रचनाओं के केन्द्र में है। इन्होंने ब्रज, अवधी, खड़ी बोली की सहज सरल एवं बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और शृंगार का सुन्दर समावेश है। शैली सरल, सुबोध और सहज ग्राह्य है। रहीम की रचनाओं में 'रहीम दोहावली' या 'सतसई' 'बरवै नायिका भेद', 'मदनाष्टक', 'रासपंचाध्यायी', शृंगारसोरठा', 'खेटकौतुक', 'नगर शोभा', संस्कृत काव्य, फुटकर काव्य विशेष उल्लेखनीय हैं।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत संकलित दोहों में रहीम ने अपने जीवनानुभवों को सहजरूप में अभिव्यक्ति दी है। वे मानते हैं मनुष्य को अपना स्वाभिमान बराबर बनाए रखना चाहिए। संगति जीवन को पर्याप्त प्रभावित करती है। मनुष्य जैसै आचरण वाले लोगों के साथ रहता है, वैसा ही बन जाता है; परंतु जो उत्तम प्रकृति के होते हैं, उन पर बुरे लोगों का प्रभाव वैसे ही नहीं पड़ता है; जैसे चंदन के वृक्ष पर साँप लिपटे रहने पर भी चंदन अपनी सुगंधि नहीं छोड़ता है। रहीम ने यह भी बताया कि विपरीत स्वभाव के लोग एक साथ परस्पर सद्भाव से नहीं रह सकते। रहीम इस बात पर जोर देते हैं कि मनुष्य को प्रेम भाव बनाए रखना चाहिए तथा पेड़-पौधों की तरह दानशील प्रवृत्ति रखनी चाहिए। मनुष्य को दुष्ट प्रकृति के लोगों से मित्रता और शत्रुता दोनों प्रकार के संबंध नहीं रखने चाहिए। वस्तुतः रहीम के दोहे जीवन की पाठशाला हैं; जिनमें धर्म, नीति, व्यवहार, राजनीति आदि जीवनोपयोगी विषय अभिव्यक्त हुए हैं।

मूल पाठ –

दोहे

अच्युत चरन-तरंगिनी, सिव-सिर-मालति-माल।
हरि न बनाओ सुरसुरी! कीजौ इन्दव-भाल।।1।।
अमी पियावत मान बिनु, रहिमन मोहि न सुहाय।
मान सहित मरिबो भलो, जो बिस देय बुलाय।।2।।
कदली सीप भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।3।।
कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
विपति-कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।4
काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भंवरी के भए, नदी सिरावत मौर।।5
खैर-खून-खाँसी खुसी, बैर-प्रीति मद–पान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।।6
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।7
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करे, बढ़ै अँधेरो होय।।8।।
रहिमन ओछे नरन सों, बैर भलो ना प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोऊ भाँति बिपरीत।।9
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठि परि जाय।।10
रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।11
प्रीतम छवि नैंनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाय।।12
यों रहीम जस होत है, उपकारी के संग।
बाँटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।।13
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।14

मथत-मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय।।15।।

•••

शब्दार्थ –

अच्युत–भगवान विष्णु/ चरन–तरंगिनी – चरणों से निकलने वाली नदी/ सिव–सिर–मालति–माल – शिवजी के सिर पर मालती की माला के समान सुशोभित होने वाली/ सुरसरी – गंगा/ इन्दव–भाल – चन्द्रमा है मस्तक पर जिसके, अर्थात् शिवजी/ अमी – अमृत/ न सुहाय – अच्छा नहीं लगता है/ बिस – विष/ कदली – केला/ भुजंग – साँप/ स्वाति – स्वाति नक्षत्र में बादलों से गिरने वाली बूँद/ सगे – निजी सम्बन्धी/ विपत्ति कसौटी – विपत्ति रूपी कसौटी पर/ कसे – खरा उतरना/ काज परै – काम पड़ जाने पर/ काज सरै – काम निकल जाने पर/ भंवरी – विवाह के फेरे/ सिरावत – बहा दिया जाता है/ मौर – मौड़/ खैर – कुशलता/ मद–पान – शराब को पीना/ दाबे – छिपाने से/ सकल – सम्पूर्ण/ जहान – संसार/ प्रकृति – स्वभाव/ कुसंग – बुरी संगति। भुजंग – साँप/ गति – दशा/ दीप – दीपक/ बारे – जलाने पर, / उजियारो करे – प्रकाश करता है,सुनहरी आशाओं को जन्म देता है/ बढ़ै – बुझने पर, बड़ा होने पर/ अंधेरो – अन्धकार, गहन निराशा/ओछे – दुष्ट/ स्वान – कुत्ता/ विपरीत – कष्टकारक/ चटकाय – चटकाकर/ गाँठि – मनोमालिन्य/ पानी – चमक, प्रतिष्ठा, जल/ सून – शून्य, व्यर्थ/ न ऊबरै – किसी काम के न रहना/ चून – आटा/पर–उपकारी – परोपकार करने वाले/ बाँटन वारे – पीसने वाले/ मही – मठा/ बिलगाय – अलग हो जाता है/ मीत – मित्र/ भीर परे – संकट पड़ने पर/ ठहराय – ठहरता है, सहायक होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. अकबर ने प्रभावित होकर रहीम को कौन–सी उपाधि दी थी ?
   (क) सूबेदार (ख) मीर
   (ग) खान खाना (घ)मिर्जा खान ( )
2. रहीम ने किस धागे को चटकाकर न तोड़ने की बात कही है ?
   (क) प्रेम का धागा (ख) सूत का धागा
   (ग) रेशम का धागा (घ) रिश्तों का धागा ( )
3. रहीम ने किसकी भक्ति में पदों की रचना की ?
   (क) भगवान शिव (ख) श्रीकृष्ण
   (ग) माता दुर्गा (घ) श्रीराम ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विपत्ति–कसौटी में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?

2. 'अच्युत- चरन तरंगिनी' में अच्युत किसे कहा है ?

3. रहीम ने किन लोगों को धन्य कहा है ?

4. 'रहिमन भंवरी के भए' में भंवरी का क्या अर्थ है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'काज परै कुछ और है, काज सरै कछु और' का आशय लिखिए।

2. रहीम सच्चा मित्र किसे मानते हैं ?

3. रहीम ने दीपक तथा कपूत की समता का वर्णन क्यों किया है ?

4. 'रहिमन पानी राखिए'में पानी में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. रहीम के काव्य की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

2. 'कदली, सीप, भुजंग, मुख, स्वाति एक गुन तीन' को विस्तारपूर्वक समझाइए।

3. रहीम के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में विचार प्रस्तुत कीजिए।

4. रहीम दुष्ट लोगों से मित्रता और शत्रुता क्यों नहीं रखना चाहते हैं ?स्पष्ट कीजिए।

5. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) 'अमी पियावत.....विष दे बुलाय'।

(ख) 'खैर-खून–खाँसी.....सकल जहान'।

(ग) 'प्रीतम छवि.....फिर जाय'।

(घ) 'जो रहीम उत्तम प्रकृति.....रहत भुजंग'।

•••